[श्री आर० एस० कुरील]

दिया जाए और उनकी रक्षा करने का आश्वासन दिया जाए, अश्योरेंस दिया जाए ताकि भविष्य में दुबारा ऐसी घटना] न घटे ।

श्री मोरारजी देसाई : सब से पहले तो सम्मानित सदस्यों से मेरी प्रार्थना है कि जिस भाषा का प्रयोग उन्होंने किया है वैसी भाषा का प्रयोग वे न करें इससे किसी को मदद नहीं पहुंचेगी । वहां इतनी धमकियां दीं, ये वहां जा कर सुरक्षित कैसे वापस आये, यह मेरी समझ में नहीं आया । इसलिए ऐसी भाषा का प्रयोग करने से क्या फायदा है ? यह बात बहुत खराब हुई है। इस तरह से करना, बन्दूक मारना, बहुत खराब हुआ है । इससे कोई इंकार नहीं कर सकता । लेकिन ऐसा कहना कि सारे हिन्दुस्तान में लोग लाठियों से मुकाबला करेंगे, इस से क्या फायदा होगा ? इसलिए मेरा कहना है कि मेहरबानी करके ऐसी भाषा का प्रयोग न करें और जो काम हम करना चाहते हैं, उस काम में हमारी मदद करें । यही मेरी उन से प्रार्थना है ।

BUSINESS ADVISORY COMMITTEE

TWENTY-FOURTH REPORT

THE MINISTER OF PARLIAMENTARY AFFAIRS AND LABOUR (SHRI RAVINDRA VARMA): I move:

"That this House do agree with the Twenty-fourth Report of the Business Advisory Committee presented to the House on the 24th August, 1978."

MR. DEPUTY SPEAKER: Just a minute. Shrimati Chandravati wants to make her personal explanation. Smt. Chandravati.

CALLING ATTENTION TO MATTER OF URGENT PUBLIC IMPORTANCE —*Contd.*

REPORTED INCIDENT OF TWO HARIJANS HAVING BEEN SHOT DEAD IN VILLAGE MOHKHERI (HARYANA)—*Contd.*

श्रीमती चन्द्रावती (भिवानी) : जनाब मेरा नाम लिया गया । जनाब मैं कहना चाहती हूं कि ला एण्ड आर्डर की जिसकी जिम्मेदारी है, जो ला एण्ड आर्डर रखने के लिए जिम्मेदार हैं, अगर वे इसे नहीं संभाल सकते हैं तो इस्तीफा दे दें ।

जनाब मैं जल्से के बारे में बताना चाहती हूं । वह जल्सा बहुत ही अनप्रोवोकेटिव था । कई लोग वहां गये थे, आर० के० मिश्र भी गये थे, मैं भी वहां गई थी । किसी ने भी वहां कोई प्रोवोकेटिव स्पीच नहीं दी । गांव के लोग गरीब हैं, वे भी जिन्दा रहना चाहते हैं । उन लोगों का गन्ना सस्ता बिका, कपास सस्ती बिकी । तम्बाकू सस्ती बिकी । उन्होंने एर्जीटेशन किया है कि उनके ठीक भाव मिलें । लेकिन आज मैं कहना चाहती हूं—

उपाध्यक्ष महोदय : आपने जो सजेशन देना था दे दिया है ।

श्रीमती चन्द्रावती : कुछ पूंजीपतियों के अखबार हैं, उनके एजेंट हैं जो चाहते हैं कि गांव की जो कम्यूनिटीज हैं वे आपस में लड़ें । उन में घृणा पैदा की जाए । गांव में चमार हैं, बनिया हैं, अहीर हैं, ब्राह्मण हैं, जितनी भी कम्यूनिटीज हैं वे वहां सदियों से बसती आ रही हैं । हमारे दादे परदादे वहां बसे थे और हम सब वहां बसे हुए हैं । लेकिन आज एक पोलिटिकल संगठन है कुछ लोग हैं जो वहां वैर भाव फैला रहे हैं, इस संगठन को बन्द होना